

शिवतांडव स्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले

गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजंगतुंगमालिकाम् ।

ऽमङ्गमङ्गमङ्गमन्निनाहवङ्गमर्वयं

चकार यण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥ १ ॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निनिम्पनिर्जरीविलो

लवीथिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि ।

धगद्धगद्धगज्जवलललाटपट्टपावके

किशोरचन्द्रशेअरे रतिः प्रतिक्षणं भम ॥ २ ॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरसङ्ग

रुद्विगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।

कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापट्टि

क्वथिद्विगम्भरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥ ३ ॥

जटामुजंगपिंगलस्फुरत्क्षणाभणिप्रभा-

कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तद्विग्वधूमुजे ।

महान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयभेदुरे

मनो विनोदमद्भुतं भिभर्तुं भूतभर्तरि ॥ ४ ॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेभशेअरप्रसूनधू

लिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।

भुजंगराजमालया निभद्धजटबूटकः

श्रियै थिराय जयतां चकोरबन्धुशेअरः ॥ ५ ॥

ललाटयत्परज्जवलद्धनञ्जयस्फुलिंगभानिप

ीतपञ्चसायकं नमन्निनिम्पनायकम् ।

सुधामयूजलेभया विराजमानशेअरं

महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ॥ ६ ॥

करालभालपट्टिकाधगद्गगद्गगज्जवलद्धनञ्ज

यालुतीकृतप्रयाण्डपञ्चसायके ।

धराधरेन्द्रनन्दिनीकुयाग्रयित्रपत्रक-

प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥ ७ ॥

नवीनभेधमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कु

लूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः ।

निलिम्पनिर्जरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः

कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्गुरन्धरः ॥ ८ ॥

प्रकुलनीलपंकजप्रपञ्चकालिमप्रभावलि

म्भकण्डकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।

स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मभच्छिदं

गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥ ९ ॥

अभर्वसर्वभंगलाकलाकन्दम्भमञ्जरीरसप्रवालमाध

ुरीविभृम्भणामधुव्रतम् ।

स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मभान्तकं

गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥ १० ॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुङ्गमश्वसद्विनि

र्गमत्कमस्फुरत्करालभाललव्यवाट् ।

धिभिद्धिभिद्धिभिद्धिवनन्मृदंगतुंगमंगलध्वनि

कमप्रवर्तितप्रयाण्डताण्डवः शिवः ॥ ११ ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुङ्गमौक्तिकस्रजे-

र्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।

तृणारविन्दयक्षुषोः प्रजामलीमलेन्द्रयोः

समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥ १२ ॥

कदा निलिम्पनिर्जरीनिकुञ्जकोटरे वसन्

विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वलन् ।

विलोललोललोयनो ललामभालललकः  
शिवेति मन्त्रमुच्यरन् कदा सुभी लवाम्यहम् ॥ १३ ॥  
ईमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं  
पठन् स्मरन् भ्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।  
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं  
विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम् ॥ १४ ॥  
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं  
यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।  
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरंगयुक्तां  
लक्ष्मीं सदैव सुमुष्मीं प्रददाति शम्भुः ॥ १५ ॥  
॥ ईति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥